North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

CIF IMPACT FACTOR:4.465

ISSN: 2454-2326 Vol. 3, Issue-10 October-2017

उच्चतर माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर का तुलनात्मक विश्लेषण।

सुषील कुमार उपाध्याय

शोधरत छात्र
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
कर्नाटक, धारवाड ।

शैक्षिक उपलब्धि की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

प्राचीन काल से ही शिष्यों के ज्ञान की परीक्षा किसी न किसी रुप में की जाती रही है। जब गुरु के पास ज्ञानार्जन के उद्देश्य से जाते थे तो पहले उनकी जिज्ञासा भाव एवं उपलब्धि की परीक्षा ली जाती थी। इसी प्रकार तक्षशिला, नालन्दा शिक्षा केन्द्रों में जो शिष्य प्रवेश लेने के इच्छुक थे उन्हें पहले द्वार पर उपस्थित ज्ञानीजनों के प्रश्न का उत्तर देना होता था। इस प्रकार उनके ज्ञान की परीक्षा ली जाती थी। प्रवेश के पश्चात् आश्रम अथवा संस्था छोड़ने के पूर्व उपाधि प्रदान करने के पहले ही परीक्षा ली जाती थी जिसका स्वरुप मौखिक ही था। समय के साथ उपलब्धि परीक्षण करने के व्यवस्था में परिवर्तन होता गया। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास पर जोर दिया जाता है क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान मात्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बालक के शारीरिक, संवेगात्मक, मानसिक तथा सामाजिक विकास से भी सम्बन्ध रखता है। व्यक्तित्व के पूर्ण अनुकूलन के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्तित्व की विशेषताओं का मापन किया जाय। प्राचीन काल में इसके लिए मापदण्ड था उसमें त्रुटियाँ थी और वह विश्वसनीय नहीं था।

इस शताब्दी के शुरुआत से शिक्षा में उपलब्धि परीक्षा का स्वरुप बदला। पुराने प्रक्रिया के स्थान पर अब नये माप विश्वासी एवं प्रमाणी मापन विधियों का निर्माण किया गया है। उपलब्धि परीक्षणो का इतिहास काफी प्राचीन है आज के युग में तो शिक्षा के सभी क्षेत्रों में इस प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग हो रहा है। सर्व प्रथम 1840 में शिक्षा बोर्ड के सचिव मन ने लिखित परीक्षाओं पर जोर दिया। इसी के परिणाम स्वरुप बोस्टर

ने भी लिखित परीक्षाओं पर जोर दिया। उन्नीसहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सर्व प्रथम फिषर ने इन परीक्षणों का सूत्रपात किया। इसके उपरान्त इस दिशा में डॉ0 जे0एन0 राइस ने विशेष सहयोग दिया, तथा 1904 में एक वर्ण विन्यास वस्तु निष्ठ परीक्षण का निर्माण किया। राइस ने इस परीक्षण को एक विस्तृत समूह पर प्रशासित किया। ऐतिहासिक रुप से इस परीक्षण का विशेष महत्व है। सन् 1900 में इस बात की आवश्यकता हुई कि कालेज एवं विश्वविद्यालय में डिग्री पाने के लिए किसी कसौटी का होना अनिवार्य है, ने इन परीक्षणों को अनिवार्य बना दिया। प्रथम मानकी परीक्षण का निर्माण सन् 1908 में थार्न डाइक के शिष्य स्टोन ने किया। स्टोन ने गणितीय तर्क पर परीक्षण का निर्माण किया। सन् 1920 तक विभिन्न विषयों पर अनेक मानकीकृत परीक्षणों का निर्माण हुआ।

भारत में निष्पत्ति परीक्षण :

भारत में इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य हुआ। हिन्दी भाषा में उपलब्धि परीक्षणों के निर्माण में प्रमुख योगदान, मनोविज्ञान उ0प्र0, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली तथा पटना मोहसिन ने उल्लेखनीय योगदान दिये। विभिन्न सामाजिक विषयों पर उपलब्धि परीक्षणों के निर्माण में सराहनीय योगदान अजमेर के डाक्टर आर0के0 भटनागर, मद्रास के आराम व रघुवंशी, दिल्ली के गोपाल, बड़ोदरा के सरोजनी देसाई आदि ने दिया।

विद्यालय शिक्षा का महत्वपूर्ण, श्रेष्ठ और सक्रिय साधन हैं बालक के व्यक्तित्व विकास में विद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि स्कूल के अध्यापक बालक के साथ–साथ उनके परिवारों के सम्बन्ध मे जानकारी रखते हैं तो उन्हें बालकों को समझने व शिक्षा देने में अधिक सुविधा रहती है। जिन बच्चों को अच्छा पारिवारिक वातावरण मिलता उनके विद्यालय में शैक्षिक उपलब्धि अन्य बच्चों की अपेक्षा अच्छी होती है। डॉ0 निगम तथा सरफराज (2005) ने एक अध्ययन किशोरों की शैक्षिक निष्पत्ति पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव पर किया तथा अध्ययन कर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय की समग्र वातावरण का प्रभाव पड़ता है। ग्लासर ने एक अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि विद्यालय उन विद्यालयों की उपलब्धि को अवरुद्ध कर देते हैं जो विद्यार्थी विद्यालय में असफल हो जाते हैं। अथवा शैक्षिक उपलब्धि में अन्य विद्यार्थियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने से पीछे रह जाते हैं। विद्यालय से केवल उन्ही विद्यार्थियों को लाभ होता है जिनका विद्यालय में कार्य निष्पादन अच्छा होता है। ग्लासर ने आगे कहा है कि विद्यालय में शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर ही विद्यार्थी की सफलता को आका जाता है। उनकी सफलता आंकते समय उसकी

सीखने के अन्य प्रकार के अनुभवों पर ध्यान नहीं दिया जाता। विद्यालय में बच्चा अपने सहपाठियों द्वारा विद्यालयों के शिक्षकों आदि के व्यवहार से ही प्रभावित नहीं होता बल्कि विद्यालय का सामान्य वातावरण ही बालक के व्यवहार को प्रभावित करता है। उसे विभिन्न सामाजिक, आर्थिक स्तर के बच्चों के साथ मिलने का अवसर मिलता है।

विषय की आवश्यकता :

सामान्यतः देखा जाता है कि आर्थिक रूप से सम्पन्न बालक निजी विद्यालय मे अध्ययन करते हैं जबकि आर्थिक रूप से विपन्न बालक सरकारी विद्यालय मे अध्ययन करते हैं। शोध में यह जानने का प्रयास किया गया है कि निजी एवं सरकारी विद्यालयों में से किन विद्यालयों के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं सन्तुलित आहार का उनके व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर किस प्रकार का प्रभाव पडता ळें

अध्ययन के उद्देष्यः

1ःउच्चतर माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालय के बालकों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

2ःउच्चतर माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालय के बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

3ःउच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के बालकों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

4ःउच्चतर माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

5ःउच्चतर माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर का अध्ययन।

परिकल्पनाएंः

- निजी एवं सरकारी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर सम्बन्धी परिकल्पना–
  निजी एवं सरकारी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।
- निजी एवं सरकारी विद्यालयों के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर सम्बन्धी परिकल्पना–
  निजी एवं सरकारी विद्यालयों के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।

परिसीमांकनः

प्रस्तुत शोध कार्य में केवल उच्चतर माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यार्थियों को आदर्श मानकर अध्ययन किया जाएगा। जिसमें निजी विद्यालय के 150 छात्र तथा 150 छात्राएं और सरकारी विद्यालय के 150 छात्र और 150 छात्राओं को लिया जाएगा।

शोध विधिः प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालयों का सर्वेक्षण किया है।

शोध उपकरणः प्रस्तुत शोध मे उच्चतर माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के प्राप्तांको को विद्यालय के रजिस्टर से प्राप्त किया गया है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालयो के विद्यार्थियों के प्राप्त प्राप्तांक के प्रतिशत को सारणीबद्ध किया गया तथा प्रत्येक विद्यार्थी के प्राप्तांक के प्रतिशत की तालिका बनायी गयी तथा सांख्यकी गणना की गयी।

सांख्यकीय गणना – सभी छात्र एवं छात्राओं का योग अलग समूहो के आधार पर वर्गीकृत किया गया तथा मध्यमान, मानक विचलन परीक्षण, एव अनुपात तथा सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया।

1. **मध्यामन का सूत्र–**

$$M = AM + \left(\frac{\Sigma Fd}{N}\right) \times i$$

AM = कल्पित मध्य

F = आवृत्तियाँ

d = विचलन

N = आवृत्तियों का योग

i = वर्ग का आकार

2. मानक विचलन का सूत्र–

$$SD = \sqrt{\frac{\Sigma Fd^2}{N} - (\frac{\Sigma Fd}{N})^2}$$

F = आवृत्तियाँ

d = विचलन

Fd = विचलन और आवृत्तियों के मध्य गुणा

Fd^2 = विचलन और आवृत्तियों के मध्य गुणा करके प्राप्त का विचलन के साथ गुणा Fd विचलन के साथ गुणा

N = आवृत्तियों का योग

i = वर्ग का आकार

3. क्रान्तिक निष्पत्ति का सूत्र–

+ value = D/D

$$CR = \frac{M1-M2}{\sigma d}$$

$$\sigma D = \sqrt{\frac{\sigma 1^2}{N} + \frac{\sigma 2^2}{N}}$$

M^1 = पहले समूह का मध्यमान

M^2 = दूसरे समूह का मध्यमान

σ_1 = पहले समूह का प्रमाणिक विचलन

σ_2 = दूसरे समूह का प्रमाणिक विचलन

N^1 = प्रथम समूह

N^2 = द्वितीय समूह

सार्थकता स्तर DS(1-96) स्तर 01 (2.58) स्तर पर यदि 1.96 या 2.58 से सार्थकता अधिक है तो हमारी परिकल्पना अस्वीकार होती है यदि प्राप्त स्तरो से कम सार्थकता होती है तो परीकल्पना स्वीकार होती है।

4. **सह सम्बन्ध का सूत्र–**

$$r = \frac{\sum XY}{\sqrt{\sum X^2 \sum Y^2}}$$

XY = वास्तविका मध्यमान से विचलन

∑XY = X विचलन और Y विचलनो के गुणनफल का योग

∑XY = मध्यमान से X प्राप्तांको के विचलनो के वर्गो का योग

$\sum Y^2$ = मध्यमान से Y प्राप्तांको के विचलनो के वर्गो का योग

प्रदत्त विष्लेषणः

निजी एवं सरकारी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन का सांख्यकीय विश्लेषण :

	मध्यमान	**विचलन**	**क्रा0 अनुपात**	**सार्थकता स्तर**
निजी	47.59	6.66	2.59	सार्थक
सरकारी	49.72	7.5		.01 स्तर पर

व्याख्या– तालिका से ज्ञात होता है कि निजी एवं सरकारी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है क्योंकि मध्यमान सरकारी 49.72 निजी 47.59 है दोनो में अन्तर 2.23 और क्रान्तिक अनुपात भी 2.59 है जो .01 के मान 2.58 से भी अधिक है अतः दोनो विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर निश्चित है परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

निजी एवं सरकारी विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन का सांख्यकीय विश्लेषण :

	मध्यमान	विचलन	क्रा0 अनुपात	सार्थकता स्तर
निजी	47.88	7.04	.89	असार्थक
सरकारी	48.61	7.22		

व्याख्या– तालिका से ज्ञात होता है कि निजी एवं सरकारी और निजी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में असार्थक अन्तर है क्योंकि सरकारी व निजी छात्राओं के मध्यमान में अन्तर केवल .73 का है और क्रान्तिक अनुपात भी .89 है जो .05 के मान 1.96 से कम है अतः असार्थक है और शोध की परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष: 1– निजी एवं सरकारी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है अतः दोनो विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर प्राप्त हुआ है।

2–निजी एवं सरकारी विद्यालयों छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में असार्थक अन्तर है अतः दोनो विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नही है।